क्रान्तिकारी आन्दोलन के उद्देश्य एवं जनपद–जालौन

डॉ0 रणविजय सिंह,
प्रधानाचार्य
राजकीय इटर कालेज
लखैयाकला, नानपारा, बहराइच–उ0प्र0

सन् 1919 तक भारत तथा विदेशों में क्रान्तिकारी–आतंकवादी गतिविधियॉ धीमी पड़ गयी थी, परन्तु विदेशी शासन के प्रति संघर्ष के प्रयास निरन्तर चलते रहे। सन् 1927 में गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन की विफलता ने आंतकवादी कार्यों को फिर से प्रोत्साहित किया। सम्पूर्ण भारत की पुरानी क्रान्तिकारी संस्थाओं को पुनजीवित करने के लिए एक अखिल भारतीय क्रान्तिकारी संगठन की आवश्यकता महसूस की गयी थी, जो देश के विभिन्न भागों में क्रान्ति का संचालन उचित ढंग से कर सके।(1)

इस समय क्रन्तिकारी आन्दोलन की दो धारायें विकसित हुई– एक पंजाब, उत्तर प्रदेश एंव बिहार में तथा दूसरी बंगाल में। ये दोनों धारायें सामाजिक बदलाव में उपजी नई सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिकशक्तियों से प्रभावित हुई। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात मजदूर संगठनों का उदय हुआ। क्रान्तिकारियों को इस वर्ग की क्रान्तिकारी क्षमता का अन्दाज था और वे इसका इस्तेमाल राष्ट्रीय क्रान्ति एंव स्वतंन्त्रता प्राप्ति के लिए करना चाहते थे। इस समय की एक अन्य प्रभावकारी घटना बहुत प्रेरणादायक थी और ये नये समाजवादी रूस तथा उसके सत्तारूढ़ दल (बोल्शेविक पार्टी) से मद्द लेने के इच्छुक थे।(2)

'रौलट एक्ट कमेटी' की सिफारिश पर गिरफ्तारियों के विरोध में गाँधी जी ने हड़ताल का आवाह्न किया जिसमें जनता ने अपना अभूतपूर्व सहयोग देते हुए बृहद स्तर पर विरोध का प्रदर्शन किया। जनता को सबक सिखाने के लिए 1919 को **'जलियाँवाला काण्ड'** हुआ जिसमें जनरल कोडायर ने हजारों निहत्थे लोगों को भून दिया।(3) सितम्बर 1920 में लाला लाजपतराय ने कांग्रेस को चेतावनी दी यदि जनता के आक्रोश का समाधन नहीं किया गया तो इससे देश का हित नहीं होगा। इस पर गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन शुरू किया जिसने ब्रिटिश हुकूमत को हिला दिया, लेकिन सन् 1922 में चौरी चौरा में हुई हिंसा के बाद गॉधी जी ने अपना आन्दोलन वापस ले लिया। इससे जनता को बड़ी हताशा हुई और क्रान्तिकारियों ने पुनः संगठित होकर अस्त्र उठाने का फैसला किया। यहीं से **'क्रान्तिकारी आन्दोलन'** का द्वितीय चरण प्रारम्भ होता है।

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात आम माफी में सिलसिले में शचीन्द्र नाथ सान्याल, सेठ दामोदर स्वरूप एवं सुरेश भट्टचार्य जैसे **'बनारस षड़यंत्र'** से सम्बन्धित क्रान्तिकारी छूट चुके थे। शचीन्द्र नाथ सान्याल ने पहले ही एक क्रान्तिकारी दल की स्थापना की थी। इसी बीच बंगाल की क्रान्तिकारी संस्था **'अनुशीलन समिति'** ने क्षेत्र सिंह को भेजकर बनारस में कल्याण आश्रम खोला जिसने गुप्त रूप से क्रान्तिकारी गतिविधियॉं संचालित करना प्रारम्भ कर दिया था। बहुत दिनों तक दोनों अलग–अलग कार्य करते रहे परन्तु उन्हें यह अनुभव हुआ कि एक अखिल भारतीय क्रान्तिकारी दल की आवश्यकता है। सन् 1924 में कानपुर में क्रान्तिकारियों का एक सम्मेलन आहूत

हुआ जिसमें शचीन्द्र नाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, सुखदेव, भगवती चरण वर्मा एवं चन्द्रशेखर आजाद सहित अन्य प्रमुख क्रान्तिकारियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन के पश्चात् **'हिन्दुस्तानी रिपब्लिक एसोशियेशन'** की स्थापना की गई।[4] इसकी शाखायें देश के अन्य भागों में भी खोली गई एवं राम प्रसाद बिस्मिल को इसका प्रधान बनाया गया। इस संस्था के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे.....

1. गाँधी जी की अंहिसात्मक नीति के विरूद्ध जनमानस को तैयार करना।
2. स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिये प्रत्यक्ष कार्यवाही करना।
3. भारत में एक 'संघीय गणतन्त्र' की स्थापना करना, जिसमें सभी प्रान्तों को घरेलू विषयों पर पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त होगी; सभी वयस्क व्यक्तियों को मत देने का अधिकार होगा और एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना होगी जिससे मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण न हो सके।[5]

अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संस्था ने हथियार बनाने एवं सरकारी खजाने लूटने की नीति अपनाई गयी। संस्था का प्रथम कार्य **'काकोरी ट्रेन डकैती'** था जिसे कहा जाता है। इस काण्ड में प्रमुख रूप से शचीन्द्र नाथ बख्शी, राम प्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्रनाथ लहोड़ी, रोशन सिंह, रवीन्द्र मोहनकर, अशफाक उल्ला खाँ एवं चन्द्रशेखर आजाद ने प्रमुख रूप से भाग लिया।[6] इस क्रान्तिकारी घटना में जनपद–जालौन के वीर भद्र तिवारी ने सहभागिता देकर अपनी क्रान्तिकारी भावना प्रकट की थी।[7] काकोरी काण्ड के समकालीन कुछ अन्य क्रान्तिकारी कार्य भी हुये जिनमें प्रमुख थे–एम0एन0राय के नेतृत्व में सन् 1920 में कानपुर साम्यवादी षड़यंत्र, सन् 1923–26 का किशन सिंह गड़गज्ज के नेतृत्व में 'बब्बर अकाली आन्दोलन; शैलेन्द्र चक्रवर्ती के नेतृत्व में सन् 1927 का 'देवधर षड़यन्त्र, मनभाड एवं 'दक्षिणेश्वर बम' का मामला।[8]

काकोरी काण्ड के बाद सरकार द्वारा हुई कार्यवाहियों के परिणाम स्वरूप अधिकाँश क्रान्तिकारी या तो पकड़े गये अथवा भूमिगत हो गये। पकड़े जाने वालों में से कुछ को तो फाँसी की सजा मिली तो कुछ को लम्बी जेल की सजा। चन्द्रशेखर आजाद यद्यपि **'काकोरी काण्ड'** में शामिल थे परन्तु अंग्रेजी शासन की पकड़ से परेय रहते हुए भूमिगत हो गये थे। पुनः 8 सितम्बर सन् 1928 को आजाद ने क्रान्तिकारी दल का नेतृत्व सँभाला तथा उन्होंने **'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोशियेशन'** का नाम बदल कर **'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशियेशन'** रख दिया।[9] इसे 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' कभी कहा गया। इसके पूर्व में ही सन् 1926 में सरदार भगत सिंह, यशपाल एवं छबीलदास आदि युवकों ने **'नौजवान सभा'** की स्थापना की थी जो कि 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशियेशन' का ही 'युवा मंच' था। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे–

- ❖ सम्पूर्ण भारत में स्वतन्त्र मजदूर और किसान राज्य की स्थापना।
- ❖ युवकों में देशभक्ति की भावना का प्रसार करना।
- ❖ मजदूर एवं किसानों को संगठित करना।
- ❖ संप्रदायिकता से दूर रहना और आर्थिक, औद्योगिक तथा व्यापक सामाजिक आन्दोलन के प्रति सहानुभूति रखना।[10]

भारत में बढ़ते क्रान्तिकारी आन्दोलन, स्वराज्य पार्टी और कांग्रेस के आन्दोलन से विवश होकर भारत के बारे में सुधारों की सलाह देने के लिए ब्रिट्रिश सरकार ने इंग्लैण्ड से प्रसिद्ध वकील साइमन की अध्यक्षता में

एक **'साइमन कमीशन'** भारत भेजा। कमीशन के सभी सदस्य अंग्रेज होने के कारण कांग्रेस और अन्य प्रमुख राजनैतिक संगठनों ने इस कमीशन का बहिष्कार करने का निर्णय लिया। 20 अक्टूबर सन् 1928 को **'साइमन कमीशन'** के लाहौर पहुँचने पर इसके विरोध के लिए जुलूस को तितर–बितर करने के लिए पुलिस सुपरिन्टेण्डेट **'मिस्टर साण्डर्स'** के आदेश पर भयंकर लाठीचार्ज किया गया। इस लाठीचार्ज में लाला लाजपत राय पर साण्डर्स ने बहुत लाठियाँ बरसाई, जिससे लाला जी को गम्भीर चोटे आयी। इसी दिन शाम को लाहौर में **'मसूरी दरवाजे'** पर हुई विरोधसभा में लाला जी ने अपने ओजपूर्ण भाषण में कहा **''जो सरकार निहत्थी प्रजा पर इस तरह के जालिमाना हमले करती है उसे सभ्य सरकार नहीं कहा जा सकता और ऐसी सरकार कायम नहीं रह सकती। मैं घोषणा करता हूँ कि मेरे ऊपर की गई एक–एक चोट भारत में अंग्रेजी राज्य को कफन की आखिरी कील साबित होगी।''**(11)

7 नबम्वर सन् 1928 को हुए लाला लाजपज राय के देहान्त का समाचार मिला तो सरदार भगत सिंह एवं उनके साथियों का खून खौलने लगा। उन्होंने साण्डर्स को लाला जी पर लाठियां बरसाते हुए देखा था। भगत सिंह, आजाद आदि क्रान्तिकारियों की पहल पर **'हिन्दुस्तान प्रजातान्त्रिक सेना'** ने भी यह निश्चित किया कि इसका बदला लिया जाये। कई दिनों तक 'साण्डर्स' और स्कार्ट के आने जाने के रास्ते पर निगाह रखी गयी। इस अभियान में चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह व जय गोपाल ने हिस्सा लिया। 17 दिसम्बर सन् 1928 को पुलिस हेडक्वाटर से 'साण्डर्स' जैसे ही अपनी मोटर साइकिल से आगे बड़ा तो अनुकूल स्थिति देख राजगुरू ने उसकी गर्दन में गोली मारी और भगत सिंह ने भी चार–पाँच गोलियाँ उसके सीने पर धाय–धाय कर उतार दीं।(12) चंदन सिंह नाम के सिपाही को आजाद द्वारा ढेर करने के पश्चात सभी गायब हो गये। इस घटना का किसी को काई सुराग नहीं मिला। बाद में **'हिन्दुस्तानी प्रजातान्त्रिक सेना'** की ओर से इस घटना का उद्देश्य बताने हेतु छोटे–छोटे पोस्टर लगाये गये। जिसका मजमून निम्नांकित था–

''..... हमें एक व्यक्ति की हत्या का खेद है, परन्तु यह व्यक्ति उस निर्दयी, नीच और अन्यायपूर्ण व्यवस्था का अंग था जिसे समाप्त कर देना आवश्यक था। इस व्यक्ति की हत्या हिन्दुस्तान में ब्रिटिश शासन के कारिन्दे के रूप में की गई है। यह सरकार संसार की सबसे अत्याचारी सरकार है। मनुष्य का रक्त बहाने के लिए हमें खेद है, परन्तु क्रान्ति की वेदी पर रक्त बहाना अनिवार्य हो जाता है। हमारा उद्देश्य ऐसी क्रान्ति से है जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अन्त कर देगी।''(13)

दिनांक : 18 दिसम्बर 1928 ई0

ह0बलराज

सेनापति पंजाब हि0प्र0स0

8 अप्रैल सन् 1929 को वायसराय की घोषणा असेम्बली में सुनाई जाने वाली थी तभी क्रान्तिकारियों ने योजना बनायी कि इसी समय असेम्बली में बम फेंका जायेगा। जयदेव कपूर ने 'भगत सिंह' और 'बटुकेश्वर दत्त' को असेम्बली में ले जाकर उस स्थान पर बैठा दिया जहाँ से बिना किसी सदस्य को नुकसान पहुँचाये बम फेंका जा सकता था। ज्यों ही विशेषाधिकार से बिलों को वायसराय द्वारा पास होने की घोषणा होने की हुई, दोनों अपने स्थान पर खड़े हो गये भगत सिंह ने बम निकालकर सरकारी बैन्चों के पीछे खाली वाली जगह पर बम फेंक दिया। धमाका इतना जोर का था कि मानो कानों के पर्दे फट गये हो। लोग समझ भी न पाये थे कि भगत सिंह ने दूसरा बम फेंक दिया। इस धमाके ने रहे–सहे होश भी गुम कर दिये।(14) तभी उन्होंने छत की ओर पिस्तौल करके दो फायर और झोंक

दिये। गैलरी से असेम्बली की कार्यवाही देख रहे साइमन साहब ही वहाँ से सबसे पहले जान बचाकर रफूचक्कर हो गये थे। जब तक धुआँ साफ होता तब तक असेम्बली के कुछ भारतीय सदस्यों पं0 मोतीलाल नेहरू, मुहम्मद जिन्ना एवं पं0 मदन मोहन मालवीय को छोड़कर सारा हाल खाली हो चुका था। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बड़े जोरों से नारा– **''इन्कलाब जिन्दाबाद. ..... साम्राज्यवाद का नाश हो''** लगाते हुए असेम्बली हाल में पर्चे फेंके।

असेम्बली काण्ड के मुकदमें में न्यायधीश ने फैसले में यह भी कहा **''उनके भाग जाने के लिए काफी अवसर थे किन्तु पहले से ही निश्चित था कि उन्हें भागकर बचना नहीं बल्कि अपनी बात कह सकने का अवसर पैदा करना है।''**[15] अदालत में अपने बयान में भगत सिंह क्रान्तिकारियों के उद्देश्यों को दर्शाते हुए माना था कि क्रान्ति के लिए खूनी लड़ाइयां अनिवार्य नहीं और न ही क्रान्ति में व्यक्तिगत प्रति हिंसा के लिए कोई स्थान है। यह बम और पिस्तौल का सम्प्रदाय नहीं है। क्रान्ति से हमारा तात्पर्य है अन्याय पर आधारित मौजूदा समाज व्यवस्था में आमूल परिवर्तन।[16]

क्रान्ति की इस भावना से जनता की आत्मा स्थायी तौर पर ओत–प्रोत रहनी चाहिए। रूढ़िवादी शक्तियाँ मानव समाज की प्रगति की दौड़ में बाधा डालने के लिए संगठित न हो सके। यह आवश्यक है कि पुरानी व्यवस्था सदैव न रहे यह नई व्यवस्था के लिए स्थान रिक्त करती रहे जिससे कि एक आदर्श व्यवस्था संसार को बिगाड़ने से रोक सके। यही हमारा अभिप्राय जिसको ह्रदय में रखकर हम **'इन्कलाब जिन्दाबाद'** का नारा ऊँचा करते है।[17]

आतंकवाद (क्रान्तिकारीवाद) आततायी के मन में भय पैदा करके पीड़ित जनता के प्रतिशोध की भावना जाग्रत कर उसे शक्ति प्रदान करता है। इससे अस्थिर भावना वाले लोगों को हिम्मत बँधती है तथा उसमें आत्मविश्वास पैदा होता है इससे दुनिया के सामने क्रान्ति के उद्देश्य का वास्तविक स्वरूप प्रकट हो जाता है।[18] क्यों कि यह कि राष्ट्र की स्वतन्त्रता की उत्कट महत्वाकांक्षा का विश्वास दिलाने वाले प्रमाण हैं और अन्त में भारत में भी आतंकवाद क्रान्ति का रूप धारण कर लेगा तथा देश को सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक स्वतन्त्रता देने में सहायक होगा।[19]

'साण्डर्स हत्या' तथा **'असेम्बली बम काण्ड'** के बाद जब जनता पर पुलिस के जुल्ब बढ़ गये तो चन्द्रशेखर आजाद के निर्देशन में ऐसोशियेशन के दो सदस्यों ने अपना जुर्म कबूलकर अपने को गिरफ्तार करा दिया। इसका उद्देश्य जनता को पुलिस के कहर से बचाना, भारत के सुप्त राजनैतिक परिवेश में जागृति लाना, एसोसिएसन के उद्देश्यों का प्रसार तथा देश में क्रान्तिकारी चेतना को जागृत करना था। लाहौर षड़यन्त्र केस में **'हिन्दुस्तानी समाजवादी रिपब्लिकन एसोसिएसन'** को मृतप्राय कर दिया। आजाद को छोड़कर सभी क्रान्तिकारी पकड़ लिये गये। आजाद भूमिगत हो गये और झाँसी के निकट ओरछा में वेश बदल कर रहे।[20]

जब सुभाषचन्द्र बोस अपने अग्रगामी दल द्वारा क्रान्तिकारी भावनायें भर रहे थे उन्हीं दिनों लंदन में सुनाम (पटियाला) के सरदार ऊधम सिंह ने ओडायर पर गोली चलाई जो भारत में पंजाब के गवर्नर रह चुके थे और उन्हीं के आदेश से जलियाँवाले बाग, अमृतसर में असंख्य निहत्थे लोग गोलियों से भून दिये गये थे। इसी का बदला लेने के लिए सरदार ऊधम सिंह सन् 1919 में लंदन चले गये थे। उनका क्रान्तिकारी दल से सम्बन्ध रह चुका था। वे बहुत समय से ओडायर को मारने की फिराक में थे परन्तु अवसर हाथ नहीं लगा था। 13 मार्च सन् 1940 ई0 को लन्दन की एक सभा में ओडायर आए थे, वहीं ऊधम

सिंह ने डायर पर गोली चलाई। ओडायर सहित कुछ और अंग्रेज भी मारे गये।(21) सरदार ऊधम सिंह को फांसी दी गई। उन्होंने मरने से पूर्व कहा–**"मुझे मृत्यु का डर नहीं है मैंने अपने देशवासियों के घोर अपमान का बदला ले लिया है।"**(22)

इस प्रकार सम्पूर्ण देश में क्रान्तिकारी गतिविधियाँ अवसर पाते ही अपना उग्ररूप धारण कर ब्रिटिश हुकूमत के समक्ष खड़ी हो जाती थी। कानपुर से ही ज्यादा क्रान्तिकारी गतिविधियों का सूत्रपात किया जाता था। कानपुर से नजदीकी होने के कारण जनपद–जालौन में भी क्रान्तिकारी संगठनों की सुमगुमाहत पैदा हो गयी थी। इसकी परिगति सन् 1935 में कानपुर में जालौन के श्री लल्लूराम द्विवेदी ने **'विद्यार्थी यूनियन'** नामक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना कर की थी।(23) चन्द्रशेखर आजाद जब वेश बदल कर ओरछा में रहते था तब उनका आवागमन अक्सर जालौन से होते हुए रहता था। इस तरह जो उद्देश्य सम्पूर्णदेश में क्रान्तिकारी द्वारा निर्धारित किये जाते थे उनका अनुपालन ही जनपदीय क्रान्तिकारियों द्वारा किया जाता था।

जनपद–जलौन में क्रान्तिकारी आन्दोलन की गतिविधियाँ

कांग्रेस के उग्रवादी युग में जनपद में कुछ उग्रवादी गतिविधियों की हलचल पैदा हुई थी जिसमें बेनीमाधव तिवारी जैसे प्रमुख जनपदीय कांग्रेसियों ने अपनी दस्तक दी थी। प्रथम विश्वयुद्ध में मिली विजय से उत्साहित हो अंग्रेजी सरकार ने युद्ध की समाप्त पर सन् 1919 में सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों को तगमें बांटे गये थे। पूरे भारत वर्ष की भाँति जनपद–जालौन में उरई के सरकारी स्कूल में हेडमास्टर के साथ सहयोगी अध्यापक मंडल जी व भ्टाचार्य जी भी हर एक क्लास में जाकर तगमा लगा रहे थे। अपनी क्रान्तिकारिता को उद्गार करते हुए एक बालक ने तगमा लगवाने से इन्कार कर दिया था। जिसके परिणामस्वरूप गुस्से में आकर हेडमास्टर ने बालक को एक तमाचा भी जड़ दिया था। अपनी क्रान्तिकारी जीवन की शुरूवात करने वाला यह तेजस्वी बालक चतुर्भुज शर्मा था। जिन्होंने बाल्यावस्था में ही अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियों की शुरूआत सरकारी तगमों के बहिष्कार के साथ की थी। जनपद में क्रान्तिकारी गतिविधियों की दस्तक इसी से शुरू हुई थी।(24)

चौरी–चौरी की घटना घटित होने पर गाँधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन की स्थगित करने के निर्णय से पूरे देश की भांति जनपद जालौन में भी राजनैतिक गतिविधियाँ एक तरह बन्द सी हो गयी थी, इस राजनैतिक खामोशी से जनता आंशकित होने लगी थी। तभी इस शान्ति एवं खालीपन को भरने के लिए सशक्त क्रान्तिकारियों ने अपनी गतिविधियों को सक्रिय करते हुए अपने को संगठित करना शुरू कर दिया, जिससे जनपद के युवा क्रान्तिकारी इसमें सक्रिय रूप से अपनी सहभागिता को उतावते हो उठे। जनपद के प्रारम्भिक क्रान्तिकारियों में वीरभद्र तिवारी का नाम सबसे पहले आया था। गौरवर्ण धारी, ऊँचे कद के तीखे तेज स्वभाव वाले, मृदुभाषी तिवारी जी ने फरवरी सन् 1924 में हुए **'काकोरी षड़यन्त्र काड'** में हिस्सा लिया था। यह प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर जनपद की पहली क्रान्तिकारी सहभागिता थी। कानपुर में हुए क्रान्तिकारी सम्मेलन में एकत्रित चन्द्रशेखर आजाद, अशफाकुल्ला, राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिणी, रवीन्द्र नाथ सान्याल व सुरेश चन्द्र भट्टाचार्य के सम्पर्क में रहने से ही वीरभद्र जी काकोरी में रेलगाड़ी से जा रहे सरकारी खजाने को लूटने की योजना में सक्रिय रूप से शामिल हो गये थे। वीरभद्र तिवारी जी को 9 अगस्त सन् 1925 को **'काकोरी षड्यन्त्र'** में

शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया तथा हत्या, डकैती, सशस्त्र षड़यन्त्र एवं राज्य के विरूद्ध हिंसक कार्यवाही के आरोप में मुकद्मा चलाया गया।[25]

सरकार ने इस मुकद्में में अपनी मर्जी से लगायी गयी धाराओं के तहत बिस्मिल, अशफाकुल्ला, रोशन सिंह व राजेन्द्र लाहिणी को फाँसी की सजा तथा शेष गिरफ्तार 17 बन्दियों को कठोर करावास देते हुए कालेपानी की सजा सुनायी थी। स्वतन्त्रता आन्दोलन में काकोरी काण्ड का प्रदेश के राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण योगदान यह था कि असहयोग आन्दोलन के अचानक स्थगन के पश्चात जो साम्प्रदायिक दंगों का दौर शुरू हुआ था उसमें **'काकोरी काण्ड'** ही एक मात्र ऐसी राजनैतिक गतिविधि थी जिसने जनता का ध्यान साम्प्रदायिकता की तरफ से विमुख कर सरकारी हुकूमत की अत्याचारिता की ओर खींचा था।[26]

20 जून सन् 1925 को उरई में देशबन्धु चितरंजन दास के सामयिक निधन पर एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में बेनीमाधव तिवारी जी ने देशबन्धु द्वारा आजादी के आन्दोलन के दिये गये योगदान का विस्तारपूर्वक उल्लेख करते हुए उन्हें एक सशक्त क्रान्किारी नेता के रूप में प्रस्तुत कर उपस्थित युवाओं को इस नेता के क्रान्तिकारी आदर्शों को अपनाने का आवाह्न कराया था। जनपद में सत्याग्रह के उद्देश्यों व स्वतन्त्रता आन्दोलन के कार्यक्रमों की सूचना के प्रपत्र गाँवों, कस्बों व नगरों में प्रसारित किये गये तथा युवाओं ने अपनी क्रान्तिकारिता का परिचय देते हुए नगर के प्रमुख स्थलों पर यह पर्चे चिपकायें थे। इसी वर्ष कानपुर में अखिल भारतीय विद्यार्थी सभा के साथ कांग्रेस का 40 वां अधिवेशन आहुत हुआ जिसकी अध्यक्षता भारतकोकिला कही जाने वाली श्रीमती सरोजिनी नायडू ने की थी। जनपद की कानपुर से कम दूरी के कारण इस अधिवेशन में जालौन के मन्नीलाल पाण्डेय, बेनीमाधव तिवारी आदि जनपदीय प्रमुख कांग्रेसीजनों के नेतृत्व में भारी संख्या में जनपदीय कार्यकर्ताओं एवं स्वंयसेवकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की थी।[27]

यह अधिवेशन कानपुर स्वागत समिति द्वारा तैयार किये गये खादी के पांडाल में किया गया था जिसे इस सम्मेलन के पश्चात होने वाले कांग्रेस के अधिवेशन स्थलों तक रेलगाड़ी द्वारा कई वर्षों तक भेजा जाता रहा। इस अधिवेशन में कानपुर के पार्षद श्यामलाल गुप्त द्वारा लिखित झण्डागान के गायन ने राष्ट्रीय वातावरण को जोशपूर्ण बना दिया था। इस अधिवेशन में गाँधी जी ने सटीक एवं संक्षिप्त 5 मिनट के भाषण में का था कि **''यदि मुझे विश्वास हो जाय कि लोगों में जोश और उत्साह है तो मैं आज सत्याग्रह आरम्भ कर दूँ, पर अफसोस, हालत ऐसी नहीं है।''** कांग्रेस अधिवेशन के पांडाल तले अखिल भारतीय विद्यार्थी सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था, जिससे इसमें देश के प्रमुख विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के छात्रों तथा प्रतिनिधियों ने भी बड़ी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज की थी। जनपद के नगर उरई से भाग लेने वाले छात्रों में चतुर्भुज शर्मा, श्री नारायण वर्मा व श्री रत्नशुक्ल आदि प्रमुख थे।[28] इस अधिवेशन में जनपदीय कांग्रेस को अच्छा स्थान देते हुए जनपद के प्रतिष्ठित नेता मन्नीलाल जी पाण्डेय को अधिवेशन में शान्ति एवं सुरक्षा बनाये रखने के लिए सेवा दल का इन्चार्ज बनाया गया था। जालौन के एक जत्थे के टोलीनायक लम्बे–तगड़े कद के पहलवानी शरीर वाले राजाराम सिंह ने अपनी शरीरिक ताकत के बल पर विद्रोही कांग्रेसी हसरत मोहानी व अर्जुनलाल सेठी को साथियों सहित शिविर में गोला–लाठी डाल बन्द कर सिट्टी–पिट्टी गुम कर दी थी। जनपद के सेनानी मन्नीलाल श्रीवास्तव के नेतृत्व में तैयार जिला–जालौन की परेड, खुबसूरत पोशाक एवं

चुस्ती–फुर्ती देख कर सभीजनों द्वारा भूर–भूर प्रशंसा की गयी।[29]

सन् 1919 के भारत सरकार अधिनियम में अंग्रेजी सरकार ने यह प्रावधान किया था कि प्रति 10 वर्ष पश्चात संवैधानिक समीक्षा की जायेगी। ब्रिटिश सरकार ने समय से दो वर्ष पहले ही सन् 1927 में ही सर साइमन जॉन की अध्यक्षता में एक सरकारी आयोग गठित कर भारत भेजा। इस कमीशन में एक भी भारतीय सदस्य शामिल न होने के कारण भारतीयों ने इसे अपनी उपेक्षा समझते हुए ही इसका तीव्र विरोध शुरू कर दिया। साइमन कमीशन का आगमन जब बम्बई में हुआ तो उसी दिन 'साइमन वापिस जाओ' के नारे व काले झंडे दिखाकर पूरे देश में व्यापक विरोध किया गया।[30] जनपद–जालौन में भी साइमन कमीशन के विरोध में कई जगह जन सभाओं का आयोजन किया गया एवं कांग्रेसी नेताओं के नेतृत्व में जुलूस निकालकर **'साइमन वापस जाओं'** के गगनभेदी नारे लगाए गये थे। साइमन विरोधी जुलूस निकालते हुए पंजाब में लाला लाजपत राय को पुलिस की बर्बरतापूर्वक कार्यवाही के कारण किये गये लाठीचार्ज से घायल हो लाला जी का 7 नवम्बर सन् 1928 को देहान्त हो गया।[31] सरकार की इस बर्बरतापूर्ण कार्यवाही से जहाँ एक ओर देश हतप्रभ हो गया वहीं दूसरी तरफ क्रान्तिकारी और सक्रिय हो उठे।

सरकार के इस बर्बरतापूर्वक कार्यों के प्रतिरोध स्वरूप पं0 मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक सर्वदलीय समिति का गठन किया गया। इस समिति ने भारत के नये संविधान का एक प्रारूप तैयार करते हुए सन् 1928 के कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में रखा गया। इस प्रतिवेदन का प्रारूप नेहरू जी द्वारा प्रस्तुत किया गया तथा आम सभा में बहुमत के साथ पारित कर दिया। कांग्रेस के इस 43 वें कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता मोतीलाल नेहरू जी ने की थी। इस अधिवेशन में जनपद के मन्नीलाल पाण्डेय, बेनीमाधव तिवारी व कृष्णगोपाल शर्मा सहित काफी लोगों ने भाग लिया था।

गाँधी जी ने इस अधिवेशन में घोषणा की थी कि यदि वर्ष सन् 1929 के अन्त तक ब्रिटिश सरकार ने औपनिवेशिक स्तर के स्वराज शासन की स्वीकृति नहीं दी तथा नेहरू प्रतिवेदन की सिफारिशों को नहीं माना तो वे एक नया जनआन्दोलन सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ कर देंगे। गाँधी जी ने ही सन् 1929 के साल को प्रतीक्षा का साल घोषित किया था परन्तु **'हिन्दुस्तानी समाजवादी रिपब्लिकन एसोसिएशन'** के कार्यकर्त्ताओं ने 8 अप्रैल सन् 1929 को दिल्ली के केन्द्रीय एसेंबली हाल में सरदार भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त ने **'एसेंबली बम काण्ड'** करके न केवल सरकार को हिला दिया बल्कि कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व भी इस क्रान्तिकारी गतिविधि से आचम्भित रह गया।[32]

इस क्रान्तिकारी क्रियाकलाप से गोरी सरकार ने एक अघोषित कफ्यू सा लागू कर दिया। क्रान्तिकारियों से दमनात्मक पूर्वक कार्यवाहियों से निपटने के लिए सरकार ने भारतीय सुरक्षा कानून के तहत पुलिस को और अधिकार देने हेतु सम्बन्धित विधेयक सदन में रखा परन्तु राष्ट्रवादियों के भारी विरोध के कारण इसे पारित न कराया जा सका। बाद में सरकार ने इसे अध्यादेश के माध्यम से लागू किया। दोनों क्रान्तिकारियों ने बिना किसी विरोध के स्वयं को गिरफ्तार करा दिया था अतः मुकद्मा दर्ज कर सरकार ने **'साण्डर्स हत्या काण्ड'** में संलिप्तता बताकर भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव सहित तीनों को **23 मार्च सन् 1931** को फाँसी दे दी गई व गुपचुप तरीके से हुसेनवाला में सतलज नदी के तट पर इस सभी का दाह संस्कार भी कर दिया गया।[33]

गोरी सरकार को इस दुस्साहिक बर्बरतापूर्ण क्रियाकलापों ने देश के युवाओं का

खून खौला दिया था क्योंकि इन क्रान्तिकारीजनों के शव तो जला दिये गये थे परन्तु उनके बलिदान एवं विचारों को दफन नहीं किया जा सकता था। इसी विचारों से उत्साहित हो जनपद–जालौन के युवाओं ने भी जोश में आकर अंडा गाँव के पास **'रेल डकैती कांड'** किया तथा कुछ समय बाद कानपुर रेलवे स्टेशन के पुल के नीचे बम के विस्फोट को अन्जाम दिया था। क्रान्तिकारी आन्दोलन, सरकारी दमन व पुलिस बर्बरता एवं जनपद जालौन के अधिकांश कांग्रेसी नेताओं व कार्यकर्त्ताओं को जेल में जबरदस्ती के बावजूद भी पूरे उत्साह से चल रहा था। कांग्रेसजन कार्यकर्त्ताओं के मनोबल को बढ़ाने के लिए लगातार नयी–नयी योगनायें बनाते रहते थे। जनपद में एक प्रमुख क्रान्तिकारी घटना जो कि 'डिप्टी गंज की रामलीला में गोलीकाण्ड' से जानी गयी 29 नवम्बर सन् 1931 को घटित हुई थी।

27 फरवरी सन् 1931 को इलाहाबाद के अल्फेड पार्क में शहीद हुए चन्द्रशेखर आजाद की[34] शहादत में पुलिस को आजाद का पता बताने में वीरभद्र तिवारी का हाथ होने के कारण नवयुवक क्रान्तिकारियों का क्रोध चरम सीमा पर था। अतः सुरेन्द्र नाथ पाण्डेय के नेतृत्व में कानपुर में इकट्ठा हुए क्रान्तिकारियों ने वीरभद्र तिवारी को मौत के घाट उतारने का बीड़ा उठाया गया। कानपुर के नारियल बाजार में तिवारी की हत्या का पहला प्रयास किया गया। वीरभद्र पर तीन–चार क्रान्तिकारी युवकों ने ताबड़तोड़ गोली चलाई पर तिवारी का किस्मत ने साथ दिया। गोली रास्ते चलती गाय को लगी परन्तु वीरभद्र जान–बूझकर जमीन पर मृतकों की भाँति गिर गया। क्रान्तिकारियों ने समझा कि खत्म हो गया है यह सोचकर वहीं पड़ा छोड़कर चले गये। उसी दिन से वीरभद्र ने कानपुर से भागकर उरई में शरण ले ली। रमेश चन्द्र गुप्त जो कि जालौन के मूल निवासी थे को वीरभद्र को खत्म करने की जिम्मेदारी क्रान्तिकारियों द्वारा दी गयी। वर्तमान समय में कानपुर में निवास के कारण मुश्किल से घर वालों ने इस काम के लिए अनुमति दी। कानपुर के क्रान्तिकारियों के प्रयास व जनपदीय क्रान्तिकारियों के सहयोग से गुप्त जी का उरई के डी0ए0वी0 स्कूल व प्रागंण में स्थिति छात्रावास में कक्षा आठ में नाम दर्ज करा दिया गया। अनुकूल अवसर व स्थिति की तलाश में क्रान्तिकारियों द्वारा उपलब्ध कराया गया छः फायर वाला रिवाल्वर व छः कारतूस रमेश जी ने एक कपड़े में लपेट गुम्मद के पास मिट्टी में गाड़ दिये।

कोंच में जन्में वीरभद्र तिवारी भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन में एक अजीबो– गरीब मिसाल थे। **'काकोरी रेल काण्ड'** के अभियुक्त, **'वायसराय बमकाण्ड'** में सक्रिय सहयोगी तिवारी जी अपनी विलक्षण वाकपटुता व उच्चस्तरीय सम्पर्कों द्वारा कठिन से कठिन काम को आसानी से करने वाले चतुर सहयोगी के रूप में चन्द्रशेखर आजाद का विश्वास जीत लिया था। परन्तु दिल्ली षड़यन्त्र में सम्मिलित होने के पक्के सबूतों, अपनी पत्नी व पुलिस अधिकारियों के दबाब के कारण एवं अपनी प्राणप्रियता के चलते क्रान्तिकारी आजाद की गतिविधियों का सुराग पुलिस को देने के लिए एक तरह से विवश थे।[35] तिवारी जी को यह विश्वास था कि उनके इस विश्वासघाती कृत्य को जानकर आजाद व क्रान्तिकारीजन उन्हें मारने के लिए ढूढ़ रहे थे। परन्तु पुलिस षड़यन्त्र में शामिल क्रान्तिकारियों की पुख्ता जानकारी व ठिकाना इनसे जानना चाहती थी अथवा इन्हें पकड़वा देती। वीरभद्र ने धूर्ततापूर्ण व्यवहार करते हुए पुलिस से मिली भगत के चलते सत्याग्रह आन्दोलन में गिरफ्तार करा, सुरक्षित फैजाबाद जेल में बन्द करवा दिया गया। इस गिरफ्तारी में छःमाह सजा प्राप्त तिवारी स्थानान्तरण फैजाबाद जेल से इलाहाबाद जेल कर दिया गया। इलाहाबाद जेल से 15 दिन पूर्व ही इस शर्त पर रिहा किया गया था कि वह

आजाद का पता बताएगा। सुखदेव जो कि क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद के अभिन्न सहयोगी थे के शब्दों में–**''कैलाश पति पुलिस का मुखबिर बन चुका था। उसने पार्टी के बड़े से बड़े व छोटे से छोटे सदस्यों के नाम व पते पुलिस को बता दिये थे, फलस्वरूप धड़ाधड़ गिरफ्तारियां हो रही थी। वीरभद्र केन्द्रीय समिति का सदस्य होते हुए भी बाहर घूम रहा था व उसके कुचक्रों को हम भली भाँति समझ रहे थे।''** 27 फरवरी सन् 1931 की घटना का उल्लेख करते हुए सुखदेव राज जो कि एलफ्रेड पार्क में आजाद के साथ थे बताते है कि थार्म हिल रोड पर म्योर कालेज के सामने एक व्यक्ति जाता दिखाई दिया व आजाद भैय्या ने कहा था ''यह वीरभद्र जा रहा है, शायद उसने हमें देखा नहीं, कुछ मिनट पश्चात ही गोरे अफसर नाट वावर की बन्दूक चमकी और गोली आजाद की जाँघ में लगी। दनादन गोलियों की बौछार में एक गोली उनकी दाहिनी भुजा को चीरती फेफड़ों में जा घुसी। आजाद के बाएँ हाथ से पिस्तौल गरजी और नाट वावर की कलाई लूट गयी। प्राण बचाने के लिए उसने मौलत्री के पेड़ की आड़ ली। अंग्रेज सिपाहियों व आजाद के बीच गोलीबारी चलती रही। अंत में पिस्तौल में एक गोली रह जाने पर आजाद ने अपनी कनपटी पर गोरी मारकर जीवन लीला समाप्त की थी।''[36]

हर वर्ष की भाँति तत्कालीन समय में दीपावली के पश्चात डिप्टीगंज उरई में रामलीला का आयोजन किया जाता था। तभी रमेशचन्द्र गुप्त को सूचना मिली कि रामलीला में परशुराम का अभिनय करने व नाटक देखने के बेहद शौकीन वीरभद्र तिवारी रामलीला देखने अवश्य आयेगा। झाँसी से रामलीला के मंचन के लिए 24 नवम्बर सन् 1931 को एक ड्रामापाट्री आयी थी। रमेश जी ने लीला स्थल पर पहुँच चारों तरफ नजर दौड़ा देखा तो पीछे तरफ खड़े होकर वीरभद्र नाटक देख रहा था। गुप्त जी बगल में पहुँच तिवारी से 6 इंच के फासले पर खड़े हो गये फिर फुर्ती से रिवाल्वर निकाल उसकी कनपटी से सटा कर घोड़ा दबा दिया। परन्तु रिवाल्वर से गोली नहीं चली ..... घोड़ा दबाने की आवाज सुनकर तिवारी लम्बा–लम्बा जमीन पर लेट गया ..... गुप्त जी ने तुरन्त उस पर फिर निशाना लगा गोली चलाई किन्तु फिर भी गोली नहीं चली। गुप्त जी ने तीसरा प्रयास भी किया परन्तु किस्मत ने वीरभद्र का साथ दिया, और वह असफल हो गये। इसी बीच लोगों ने गुप्त जी को पकड़ लिया, पकड़ जाने के बाद हाथापाई के दौरान उनके रिवाल्वर से एक गोली चली जो जमीन पर लगी ..... 20–25 आदमियों से भला एक आदमी कहाँ तक पेश पाता, अन्त में उन्हे बेकाबू कर स्थिर कर दिया गया .... उन्होंने क्रान्तिकारी गीत गाने शुरू कर दिये ..... लोग उन्हें पकड़कर थाने ले गये ..... उन्हें जीवन भर अफसोस रहा कि वह एक साधारण सा काम पूरा न कर सके।''[37]

''रमेश जी का मुकदमा जेल में ही झाँसी के एक अंग्रेज जज द्वारा सुना गया। 24 दिसम्बर सन् 1931 को 10 वर्ष की सजा वीरभद्र को गोली मारने, 10 वर्ष चंदीबाबू को गोली मारने तथा गैर कानूनी रूप से पिस्तौल के अभियोग में 3 वर्ष की सजा दी गयी थी जो कि दिन रात मिलाकर 10 वर्ष रह गयी थी।'' जेल में क्रान्तिकारी गतिविधियों के कारण गुप्त जी का तबादला फतेहगढ़ सेंट्रल जेल कर दिया गया।

रमेश चन्द्र जी को कांग्रेस अभिमण्डल के प्रयासों से अन्ततः सन् 1938 को जेल से रिहा कर दिया गया था। परन्तु गुप्त जी की सजा का अभिशाप उस स्कूल डी0ए0वी0 को भी भुगतना पड़ा, जिसके छात्र ने यह काण्ड किया था। इसी अभिशप्त के रूप में डी0ए0वी0 स्कूल की सभी सरकारी अनुदान बन्द कर दी गयी थी। रामलीला काण्ड के बाद वीरभद्र तिवारी को तत्कालीन शासन का प्रबल संरक्षण मिला। तिवारी जी को

नगर पालिका उरई का चेयरमैन भी बनाया गया। परन्तु जनपदीय जनता वीरभद्र को आजाद को मरवाने वाले राष्ट्रद्रोही के रूप में ही जानती रही जिससे तिवारी जी शेष जीवन एक अभिशप्त जीवन ही जिए।

क्रान्तिकारी आन्दोलन के दौर जनपद के ग्राम कुसमिलिया में कांग्रेस के राजनैतिक सम्मेलन अक्सर होते रहते थे। एक सम्मेलन जनपद से सटे हमीरपुर के प्रमुख क्रान्तिकारी नेता दीवान शत्रुघ्न सिंह, रानी राजेन्द्र कुमारी तथा बालकृष्ण शर्मा नवीन, श्रीपत सहाय रावत, अर्जुन अरोड़ा, राजाराम शास्त्री जैसे प्रमुख क्षेत्रीय क्रान्तिकारी नेता यहाँ आये हुए थे। गरम दल के प्रमुख क्रान्तिकारी नेता रामदुलारे त्रिवेदी व अर्जुन अरोड़ा जो कि कालेपानी की सजा एक बार भोग चुके थे को कानपुर से इस सम्मेलन में शामिल होने हेतु उरई लाया गया। रेलागाड़ी द्वारा त्रिवेदी जी व अरोड़ा जी दोपहर में ही उरई पहुंच गये। गर्मियों का मौसम था और भयंकर लू चल रही थी अतः सभा का प्रबन्ध देख रहे बलदेवप्रसाद पालीवाल, प्रेमनारायण पालीवाल, रामाधार वर्मा तथा श्री त्रिलोकीनाथ मुखियां जी ने दोपहर गुजारने का स्थान वीरभद्र तिवारी का कमरा निर्धारित किया गया था।

शाम को 5–6 बजे के लगभग बैलगाड़ी द्वारा कुसमिलिया के लिए प्रस्थान करना था। अतिथियों को कमरे में ठहराकर स्वल्पाहार के रूप में मिठाई एवं शर्बत दिया गया। दोनों क्रान्तिकारी नेता विश्राम की अवस्था में बैठ सम्मेलन की रूप रेखा के बारे में पूछने लगे। कमरे की साज सज्जा व आरामदायक स्थिति को देखकर रामदुलारे त्रिवेदी जी ने पूछा बड़ा आरामदायक कमरा है, किसका है? किसी उत्साही ने बड़ी तेजी के साथ बता दिया वीरभद्र तिवारी जी का है। यह सुनते ही रामदुलारे त्रिवेदी जी ने कालीन पर कै कर दी, जो कुछ खाया–पीया था सब निकाल दिया व पसीने से लथपथ अवस्था में काँपते हुए तुरन्त कमरे से बाहर निकल पड़े। आयोजकों को गरियाते हुए बोले **"उरई वालों ने विश्वासघात किया, मुझे देशद्रोही का पानी पिला दिया, उसकी मिठाई खिला दी।"** परन्तु आयोजक सन्नपूर्वक गतिविधि देखते हुए चुप रह गये। इस प्रकार विश्वासघात के आरोप की सजा इस नगर व जनपद को कई बार भुगतनी पड़ी थी।[38]

सन् 1938 में मुहाना के जंगल में सिद्धबाबा के आश्रम में क्रान्तिकारियों ने एक गोपनीय सभा का आयोजन किया था। इस सभा में दीवान शत्रुघ्न सिंह, जगन्नाथ घोष, ठाकुर प्रसाद, परमानन्द, सुखवासी यादव, भागचन्द्र त्रिपाठी, पन्नालाल पटैरिया, रघुवंशीलाल गुप्ता, चतुर्भुज शर्मा, भान सिंह, दिल्लीपथ, नाथूराम सोनकिया, बलदेवप्रसाद पालीवाल, जगन्नाथ प्रसाद हरिजन आदि लोगों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन में क्रान्तिकारियों ने रेल के खम्भे तथा तार काटने की योजना बनायी गयी। चतुर्भुज शर्मा ने दो छेनी और हथौड़ा का प्रबन्ध कर तार काटने की जिम्मेदारी जगन्नाथ प्रसाद हरिजन व सुन्दर लाल नाई को सौंपी। 7 सितम्बर सन् 1940 की रात को उक्त दोनों क्रान्तिकारी रनिया गाँव के पास तार काँटे एवं फरार हो गये। प्राइमरी तक शिक्षा प्राप्त, 7 फुट का लम्बा कद, भीमकाय शरीर व चेहरे में भरी हुई मूंछे वाले जगन्नाथ हरिजन ने अपनी क्रान्तिकारिता का परिचय देते हुए न केवल रेल पटरी के तार एवं खम्भे कांटे थे बल्कि मार्च सन् 1942 में कुसमिलिया से गिरफ्तार हो जाने पर जेल के अन्दर ही जेलर से झगड़ा हो जाने पर तसले से अच्छी मार भी दी थी। जिससे इनके इस क्रान्तिकारी एवं उपद्रवी कृत्य से आपको उरई जेल से फतेहगढ़ जेल भेज दिया गया था।[39]

क्रान्तिकारी नेता बटुकेश्वर दत्त का सन् 1938 में काले पानी की सजा काट वापस आने पर कालपी नगर में युवाओं व छात्रों ने जोरदार

स्वागत किया था। आपके स्वागत के लिए सैकड़ों लोगों को एकत्रित जुलूस निकाला गया था। इस जुलूस का नेतृत्व कालपी के हिटलर, **''एक घण्टा देश को''** का नारा देने वाले जेल के विप्लवी क्रान्तिकारी बद्रीप्रसाद पुरवार ने किया गया। कालपी नगर में कांग्रेस के **'लगान बन्द करो'** आन्दोलन को क्रान्तिकारी रूप देने, नगरपालिका भवन की छत पर चढ़कर झण्डा (तिरंगा) फहराने के जुर्म में गिरफ्तार जेल भेजे जाने पर भी हिटलर जी को देखकर जेलर का पसीना छूट जाता था। जेल के अन्दर इस क्रान्तिकारी को भयंकर यात्रणाएं दी गयी, पैरों में बेड़िया व मन्नीलाल अग्रवाल के संग पीठ के बल बाधंकर नित्यकर्म के लिए विवश किया गया, परन्तु इस क्रान्तिकारी ने हार नहीं मानी एवं जेलर को परेशान के लिए नित नवीन बहाने खोजते हुए अपनी क्रान्तिकारी दस्तक बरकरार रखी।(40)

क्रान्तिकारियों ने जनपद में अपनी गतिविधि सक्रिय रखने के लिए बरौदा कला व खैरी में सन् 1938 में कांग्रेस पार्टी ने दो गुप्त सभाएँ रखी थी। जिसमें बरौदा कला की अध्यक्षता बालमुकुन्द शास्त्री तथा खैरी की सभा की अध्यक्षता मन्नीलाल पाण्डेय द्वारा की गयी थी। स्वतन्त्रता सेनानी व बरोदा कला के सरपंच रहे ठा0जाहर सिंह के अनुसार इस गुप्त कांफ्रेंस की योजना पूरन सिंह भदौरिया व चतुर्भुज शर्मा ने क्रान्किारी आन्दोलन को और अधिक सक्रिय करने के लिए आहूत की थी। पं0 चतुर्भुज शर्मा ने अपनी क्रान्तिकारिता का परिचय देते हुए डकोर से सत्याग्रह कर अपनी गिरफ्तारी दर्ज की थी।(41)

पहाड़पुरा में सन् 1939 में वरिष्ठ क्रान्तिकारी नेता मन्नीलाल पाण्डेय के नेतृत्व में कांग्रेस का जिलास्तरीय राजनैतिक सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में संयुक्त प्रान्त के प्रधानमंत्री रहे कांग्रेसी पं0गोविन्द बल्लव पंत जी ने विश्वयुद्ध के सन्दर्भ में देश की वर्तमान की चर्चा कर क्रान्तिकारी एवं स्वयंसेवकों को सजग रहने का आवाह्न किया गया था। इस सम्मेलन में यह भी घोषणा की गयी थी कि जो भी मण्डलकमेटी सबसे अधिक काँग्रेस के सदस्य बनायेगी, उसे ही रेशमी तिरंगा झण्डा प्रदान किया जायेगा। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए अपने क्रान्तिकारी रूप को दिखाते हुए जैसारी मण्डल ने रेशमी राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा जीत लिया था।(42)

जनपद जालौन क्रान्तिकारी गतिविधियों को नियंत्रित करने वाले, **''अप–अप नेशनल फ्लैग, डाउन–डाउन यूनियन जैक''** जैसे नारों के रचियता, बजंरग लड़ाका दल बघौरा के सेनानायक जगन्नाथ घोष क्रान्तिकारी गतिविधियों के सूत्रधार थे। क्रान्तिकारी आन्दोलन को अग्रगामी रखने के लिए घोष संघर्ष में सबसे आगे रहते हुए तोड़–फोड़, तार काटने, मारपीट व लुका–छिपी में दक्ष युवकों को क्रान्तिकारियों गतिविधियों को संचालित करने के लिए लगातार प्रेरित करते रहते थे।

जनपद के क्रान्तिकारी नगर कालपी में चौरासी गुम्मद के पास एक सरकारी गाड़ी पर धावा बोलकर क्रान्तिकारी कृत्य करते हुए कृष्णस्वरूप शर्मा ने अपने साथियों सहित समस्त सामान व सरकारी सामग्री लूटकर गाड़ी में आग लगा दी थी। शर्मा जी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया तथा डेढ़ साल की सश्रम कारावास की सजा सुनायी गयी। उरई जेल में डिप्टी जेलर पर दही फेंकने व उसकी पिटाई करने के कारण क्रान्तिकारी कृष्णस्वरूप जी को चुनार जेल भेज दिया गया। कृष्ण स्वरूप जी चन्द्रशेखर आजाद की भाँति वेशबदल पुलिस को छकाने में माहिर थे।(43)

माधौगढ़ क्षेत्र में क्रान्तिकारी गतिविधियों के सूत्रधार रहे कैलोर के ठाकुर गजेन्द्र सिंह ने सन् 1942 के आन्दोलन में जनपद में सबसे अधिक तार कटिंग, रेलवे पटरी उखाड़ने का काम

अपने साथियों डॉ0आनन्द, नारायण राव मेमने, चौबे जी आदि के साथ किया। गजेन्द्र सिंह ने तेरह स्थानों पर तार कटिंग कर जनपद की संचार व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया था। गजेन्द्र जी ने प्रताप नारायण मिश्र के साथ मिलकर माधौगढ़ की गढ़ी पर कब्जा कर तिरंगा झण्डा फहराया तथा जाली नोट बनाकर तत्कालीन अर्थव्यवस्था को भारी नुकासान पहुँचाने के अनवरत प्रयास करते थे। उग्र गतिविधियों में अत्यधिक सहभागिता के कारण आपको गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। डॉ0आनन्द ने अपने साथियों के साथ मिलकर बंगरा व माधौगढ़ के बीच नहर विभाग के किनारे लगे संचार साधनों के तार काटकर अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियाँ सक्रिय की थी। इस क्रान्तिकारी गतिविधि को एक सिपाही ने उन्हें करते देख लिया था, सिपाही द्वारा अपने साथियों के पकड़े जाने पर डॉ0आनन्द ने अपने साथियों गजेन्द्र सिंह, चौबे जी आदि सहित उस सिपाही की जमकर धुनायी की। यह घटना जनपद–जालौन के **'सिपाही काण्ड'** से जानी गयी।[44] अपने साथियों को छुड़ा सभी क्रान्तिकारी फरार हो गये। डॉ0आनन्द ने सत्याग्रह आन्दोलन के समय जेल जाने पर अपने क्रान्तिकारी स्वभाव के चलते मजिस्ट्रेट के सामने कवितामय ढ़ंग से दिया गया बयान खूब चर्चा में रहा था।

''यह लिख लीजे मेरा बयान,
थी इंग्लिश 10 तारीख और था शुभ मुहुर्त में सोमवार,
हम कांग्रेस के नारद है बस जा पहुंचे सीधे सुढ़ार,
देखा जुलूस अबलाओं का पुरूषों की देखी भीड़–भाड़
छोटे–छोटे बच्चों को भी देखा इमली के ताड़–ताड़।''[45]

डॉ0आनन्द के सहयोगी, माधौबारी क्षेत्र में क्रान्तिकारी गतिविधियों के संचालनकर्त्ता नारायण राव मेमने कांग्रेस के निष्ठावान कर्ता होने के साथ–साथ क्रान्तिकारी विचारों से सदा ओत–प्रोत रहते थे। क्रान्तिकारी समाचारों को छापकर राष्ट्रीय विचार को बढ़ाने के लिए मेमने जी इन पत्रों को लगातार वितरित करने का कार्य करते रहते थे। जनपद–जालौन के क्रान्तिकारी तुलसीराम त्रिपाठी ने अपने साथियों के साथ 8 अगस्त सन् 1943 को कानपुर सेन्ट्रल के प्लेटफार्म पर सरकारी सैनिकों को ले जाने वाली ट्रेन को उठाने का प्रयास कर अपनी क्रान्तिकारी सहभागिता दर्ज की एवं जनपद के क्रान्तिकारी आन्दोलन को जीवित बनाये रखा।

क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रमुख क्षेत्रीय नेता एवं उनका योगदान

जनपद–जालौन में क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन इस आन्दोलन से काफी समय पूर्व सन् 1857 की क्रान्ति के समय ही शुरू हो गया था। सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में जनपद का नगर कालपी स्वतन्त्रता सेनानियों की शरण स्थली बन गया था। कालपी में चाहे रानी लक्ष्मीबाई हो या नाना साहब या तात्या टोपे सभी ने अपनी क्रान्तिकारी कृत्यों का क्रियान्वयन इसी नगर से किया था। इसके पश्चात अंग्रेजी शासन ने जनपद में इतना कठोर दमनचक्र चलाया था कि देखने वालों की रूह तक काँप उठी थी। जिसके कारण लम्बे अन्तराल तक क्रान्तिकारी गतिविधियां जनपद–जालौन में बन्द पड़ गयी थी। परन्तु सन् 1920 के पश्चात पूरे देश में क्रान्तिकारी घटनाओं की चौतरफा शुरूवात हुई तो भला जनपद की जनता जिसके अन्दर क्रान्तिकारी बीच बहुत पहले से जन्में थे पुनः अपने उग्ररूप में बाहर निकलने लगे। समस्त देश में क्रान्तिकारी गतिविधियों की तरह जनपद के प्रमुख क्षेत्रीय नेताओं ने भी इस आन्दोलन में बढ़चढ़ कर हिस्सा

लेकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना सराहनीय योगदान दिया।

जनपद के युवा क्रान्तिकारी विप्लवी नेता : पं0चतुर्भुज शर्मा (1900–1976)

ग्राम मोहाना में 4 सितम्बर सन् 1900 को[46] श्री चुन्नीलाल पालीवाल के घर पैदा हुए प्रथम सन्तान चतुर्भुज शर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा उरई से प्रारम्भ हुई थी, तत्पश्चात आपने झांसी से मिडिल, इलाहाबाद से बी0ए0 एवं एल0एल0बी0 के बाद जनपद से वकालत शुरू करने की कोशिश की। आपके पिता द्वारा स्वतन्त्रता कारी गतिविधियों में संलिप्तता के चलते ही इन्हें जनपद से बाहर शिक्षा के लिए भेजा गया था। विद्यार्थी जीवन में तगमों के बहिष्कार से शुरू हुआ बालक का देशप्रेम जनपद के सहयोगी मिलते ही अपने पूर्ण वेग से चलने लगा। आपने जनपद में संचालित होने वाले स्वतन्त्रता आन्दोलनों में तीन बार जेल यात्रा कर अपनी क्रान्तिकारी छवि स्थापित की थी।

आपने जनपद में शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करते हुए गाँधी इण्टर कालेज एवं महाविद्यालय, गाँधी बाल विद्यालय, तथा ग्राम मोहाना में जवाहर हाई स्कूल की स्थापना की थी। अपने राजनैतिक जीवन की शुरूवात करते हुए 1946 में पहली बार उ0प्र0 विधान सभा के लिए जनपद से चुने गये, स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात पहले आम चुनाव में उरई विधान सभा क्षेत्र से विधायक निर्वाचित होने पर 7 जुलाई सन् 1952 को उ0प्र0 शासन में उपमन्त्री का ओहदा प्रदान किया गया। 1958 में उत्तर प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष, सन् 1962, 1967 व 1969 के मध्यवर्ती चुनावों में लगातार उरई विधानसभा से निर्वाचित होते हुए जनपद के प्रथम गणमान्य राजनैतिक नेता स्थापित हो गये।

व्यक्तिगत सत्याग्रह में डकोर से आपने अपनी गिरफ्तारी करा क्रान्तिकारी आन्दोलन में भी अपनी भागीदारी शुरू कर दी। जनपद के लोगों को सदा देशभक्ति एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए अभिप्रेरित करने वाले इस सेनानी ने 25 अक्टूबर सन् 1976 को अपनी अन्तिम साँस ली।[47]

कालपी नगर के हिटलर : बद्रीप्रसाद पुरवार (सन् 1907–1968)

'एक घण्टा देश को' का नारा देने वाले, इकहरी काया, गौर वर्ण, लम्बा एवं तीखा नाक–नक्से धारी, हमेशा तन पर खद्दर का कुर्ता व जैकेट धारण करने वाले बद्रीप्रसाद पुरवार का जन्म कालपी की हरीगंज हवेली के निवासी लक्ष्मी नारायण पुरवार के घर हुआ था। अपनी सुसज्जित वेश भूषा, तीखे मिजाज, सामाजिक व स्वतन्त्रताकारी आन्दोलन की गतिविधियों का संचालन करने के लिए जब नगर की गलियों से गुजरते तो लोग सम्मान में अपने स्थान से खड़े होकर अभिवादन करने लगते थे। आपकी स्पष्ट एवं नैतिकतावादी निर्भीकता के कारण लोग आपको हिटलर के नाम से सम्बोधित करते थे।[48]

कालपी में सन् 1938 में कालेपानी की सजा काटकर लौटे बटुकेश्वर दत्त के जोरदार स्वागत में आपने विशाल जुलूस निकालकर अपनी गरिमापूर्ण उपस्थिति दर्ज की थी। आपको **'लगान बन्द करो'** आन्दोलन को क्रान्तिकारी रूप देने के कारण एवं नगरपालिका की छत पर चढ़कर तिरंगा झण्डा फहरने के जुर्म में जेल भेज दिया गया। जेल में जेल का मैनुअल कंठस्थ कर जेलर को लगातार तंग करते रहते थे, जेल के डाक्टर को तो आपको देखकर पसीना ही आ जाता था। जेल के अन्दर लगातार विप्लवी गतिविधि एवं जेलर को छकाने के कारण इस क्रान्तिकारी को

भयंकर यंत्रणाएं देते हुए पैरों में बेड़िया व मन्नीलाल के संग पीठ से बांधकर नित्यकर्म के लिए विवश किया गया, परन्तु फिर भी इस क्रान्तिकारी ने हार नहीं मानी और जेलर को परेशान करने के लिए नितनवीन बहाने खोजते हुए अपनी क्रान्तिकारी दस्तक बरकरार रखी। जनपद के नगर कालपी में क्रान्तिकारी आन्दोलन को जीवित रखने वाली इस महानआत्मा ने 1 अक्टूबर सन् 1968 को दुनिया में अन्तिम साँस ली।

काकोरी काण्ड व लाहौर बम काण्ड के जनपदीय अभिशप्त विद्रोही : वीरभद्र तिवारी (1900–1982)

लम्बा–चौड़ा शरीर, आकर्षक मुख मुद्राधारी वीरभद्र तिवारी जी **'काकोरी काण्ड'** व लाहौर बम काण्ड में जनपद का प्रतिनिधित्व करने वाले एक मात्र व्यक्ति थे। अपनी वाकपटुता एवं उच्च लोगों से सम्पर्क साधने में दक्ष तिवारी जी **'काकोरी काण्ड'** से ही चन्द्रशेखर आजाद व क्रान्तिकारी आन्दोलन की केन्द्रीय समिति के विश्वासपात्र कर्ता बन गये थे। अपनी प्राणप्रियता, पत्नी के दबाबपूर्ण सम्बन्ध तथा पुलिस की कठोरता के आगे विवश हो चन्द्रशेखर आजाद की गतिविधि की सूचना पुलिस को बताने के कारण आप शेष जीवन एक अभिशप्त देशद्रोही व विश्वासघाती होने का दंश झेलते रहे।

आजाद को मरवाने का दोषी ठहराते हुए कानपुर के नवयुवक क्रान्तिकारीयों ने गद्दारी का बदला लेने के लिए कानपुर के नारियल बाजार में प्राण घातक हमला किया परन्तु भाग्य ने साथ दिया और बचकर वापस उरई में निवास करने लगे। उरई में भी आपको रमेशचन्द्र गुप्त ने मारने का एक असफल प्रयास किया था। आत्मरक्षा के लिए जो एक देश भक्त प्रयास करता है वह सब हथकंडे आपने भी अजमाये। परन्तु देशद्रोही एवं गद्दारी की छवि को वे कभी साफ न कर सके। रामलीला में परशुराम का अभिनय निभाते हुए डिप्टीगंज की रामलीला में आपने कई बार अपनी प्रस्तुत कर अभिनयक्षमता का जोरदार प्रदर्शन करते रहे। कर्मयोगी, देशभक्ति एवं चिन्तनशील व्यक्तित्व के चलते आपको जिला बोर्ड में कलेक्टर का पद प्रदान किया गया जिसमें वे निर्धारित उम्र तक कार्यरत रहे। अपनी पत्रकारिता क्षमता के बल पर जनपद में साप्ताहिक **'प्रहरी'** पत्र निकाल कर अपनी देशद्रोही छवि को सुधारने का प्रयास किया था परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भी विश्वासघाती अपनी छवि को नगर में दुरस्त न कर सके। जीवन के अन्तिम पड़ाव पर चल रहे तिवारी जी से वर्तमान में भी जब कोई पुरानी यादों को उकेरता तो झल्ला उठते है परन्तु कमजोर काया के कारण पुनः शान्त हो अपने को दुनिया से अलग करने का दिखावा आज भी करते है।[49]

क्रान्तिकारी, समाजवादी सेनानी : कृष्णस्वरूप शर्मा (सन् 1912–2005)

सर पर सफेद टोपी, तन पर खद्दर के वस्त्र, भरे हुए चेहरे पर चमकती बड़ी–बड़ी आखें, पहलवानी बलिस्त शरीरधारी श्री कृष्णस्वरूप शर्मा का जन्म पं0बैजनाथ शर्मा के परिवार में सन् 1912 को कालपी में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा गणेशगंज प्राइमरी स्कूल कालपी से ग्रहण करते हुए व्यास कालेज कालपी से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। विद्यार्थी जीवन में आपकी संगत नगर के प्रमुख कांग्रेसी नेता चन्द्रभानु विद्यार्थी, मोतीचन्द्र वर्मा से हो जाने के कारण आपके कदम स्वतन्त्रता आन्दोलन की गतिविधियों की ओर मुड़ गये। आपने सितम्बर सन् 1942 में चौरासी गुम्मद के पास एक सरकारी गाड़ी पर धावा बोलकर अपने साथियों के साथ राजकीय सामग्री व सामान की लूट–पाट कर आग लगा दी। इस क्रान्तिकारी गतिविधि के पश्चात आपको गिरफ्तार

कर लिया गया तथा डेढ़ साल की सजा हुई। अपने क्रान्तिकारी कर्तव्यों के चलते उरई जेल में डिप्टी जेलर की पिटाई कर दी, जिससे उन्हें उरई जेल से स्थानान्तरित कर चुनार जेल भेज दिया गया।

वेश बदल अक्सर रहने वाले शर्मा जी कभी आर्यसमाज मन्दिर, रामजानकी मन्दिर में छुपे रहते तो कभी पाहुलाल खत्री या चौरासी गुम्मद में नजर आते थे। वेशभूषा बदल पुलिस को परेशान करने में महारथ हासिल शर्मा जी बहन श्रीदेवी आपकी क्रान्तिकारी गतिविधियों में तकिए में चाकू रखकर उन्हें यथास्थान पहुंचाने में मद्द करती थी। कालपी के किले घाट पर अचानक नाव द्वारा अपने साथियों सहित प्रकट हो नारे बाजी करने वाले इस क्रान्तिकारी का 05 जुलाई सन् 2005 को स्वर्गवास हो गया।[50]

जनपद के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी : जगन्नाथप्रसाद हरिजन (1910–1981)

चार दर्जा तक शिक्षा प्राप्त, 7 फुट लम्बा कद, भीमकाय शरीर व चेहरे में भरी हुई मूँछों वाले जगन्नाथ प्रसाद हरिजन का जन्म ग्राम कुसमिलिया में सन् 1910 को श्री बूचेलाल के घर हुआ था। अपनी अल्प शिक्षा तथा घर की निम्नमाली हालत के कारण आपने जीवन के भरण–पोषण के लिए मजदूरी करना प्रारम्भ कर दिया था। मजदूरी के कारण दूर–दूर गांवों तक आवागमन के कारण आपको डकोर क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति का काफी ज्ञान हो गया था।

सन् 1932 में डिप्टीगंज उरई में हुई सभा में आपने गुप्तचर का काम करके सूचनाओं का आदान–प्रदान कर अपनी पहली सहभागिता स्वतन्त्रता आन्दोलन में दर्ज की थी। सन् 1938 में मुहाना के जंगल में सिद्ध बाबा के आश्रम में हुई गोपनीय सभा में आपको क्रान्तिकारी गतिविधियों की जिम्मेदारी सौंपी गयी। 7 सितम्बर सन् 1940 को अपने साथी सुन्दरलाल नाई के साथ रनियाँ के पास रेलवे लाइन के तार काट कर संचार व्यवस्था को बन्द कर दिया था।

3 मार्च सन् 1942 को 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के समय आपको कुसमिलिया से गिरफ्तार कर उरई जेल में रखा गया, परन्तु जेलर से झगड़ा हो जाने पर आपने जेलर पर तसला जड़ दिया, जिससे इन्हें फतेहगढ़ जेल भेज दिया गया। सन् 1944 में आप क्रान्ति रक्षक दल के सदस्य बन गये। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात आपको अपने को विरक्त करते हुए एक साधारणजन की भांति जीवन यापन करने वाले इस क्रान्तिकारी का एक मई सन् 1981 को देहान्त हो गया।[51]

जनपद के गणमान्य क्रान्तिकारी कांग्रेसी : जगन्नाथ घोष (1910–1960)

'अप–अप नेशनल फलैंग, डाउन–डाउन यूनियन जैक' नारे के रचयिता, अंग्रेजी भाषा के विशेषज्ञ, ओजस्वी वक्ता एवं जनपद की स्वतन्त्र क्रान्तिकारी गतिविधियों के सूत्रधार जगन्नाथ घोष (अहीर) का जन्म सन् 1910 में जनपद के चुर्खी ग्राम में हुआ था। बघौरा में बजरंग दल के प्रमुख, स्वस्थ व बलिष्ठ शरीर वाले, पहलवानी व घुड़सवारी के बेहद शौकीन जगन्नाथ जी को नगर के सभी जन 'घोष' के नाम से पुकारते थे। अपनी देशभक्ति एवं क्रान्तिकारियों गतिविधियों को पूर्ण वेग से संचालित करने के लिए अपने परिवार एवं परिवारीजनों को चुर्खी में छोड़ उरई में अकेले रहते थे। अंग्रेजी अखबार नेशनल हेराल्ड की एजेंसी से उरई में अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी दी थी। नगर का भ्रमण कर छात्रों व नवयुवकों को क्रान्तिकारी गतिविधियों व फाईटिंग बिग्रेड के लिए अभिप्रेरित कर ज्यादा से ज्यादा युवावर्ग को स्वाधीनता आन्दोलन में जोड़ने का

श्रेय आपको ही दिया जाता था। मध्यम परिवार में जन्म के बाबजूद अपने विचारों से उच्च वर्गों तक विवश करने वाले इस सतत् क्रान्तिकारी का सन् 1960 में निधन हो गया था।[52]

क्रान्तिकारी कांग्रेसी : नारायणराव मेमने

एक महाराष्ट्रीय परिवार के इकलौते वारिश नारायण राव मेमने का जन्म जालौन से सटे ग्राम सुढ़ार में हुआ था। आप में क्रान्तिकारी के बीज आपके अभिन्न मित्र डॉ0आनन्द ने बोये थे। स्वभाव से उदारवादी कांग्रेसी होते हुए मित्र के संगत में आपको क्रान्तिकारी के रूप में परिवर्तित कर दिया। आप डॉ0आनन्द के साथ मिलकर प्रपत्रों को छापकर गाँव–गाँव जाकर बांटा करते थे तथा लोगों के अन्दर देशभक्ति की भावना सशक्त करते थे। साइकिल पर सवार हो खद्दर की शर्ट तथा हाफ पैंट पहने मेमने जी की यात्रा नित्य नवीन क्षेत्र में जाकर देशभक्ति का उद्गार करती थी। जनपद के समस्त कार्यक्रमों की सूचना को प्रसारित करना, विदेशी वस्त्रों की होली जलाना, जुलूसों में शामिल होना तथा जनसभाओं को जोशपूर्ण शब्दों से सम्बोधित करना आपके दैनिक कार्य थे।[53]

जनपद के मान्यताप्राप्त कवि व क्रान्तिकारी सेनानी : डॉ0मुन्नूलाल आनन्द (1900–1977)

अपनी सटीक, कटाक्ष एवं व्यंग्यात्मकपूर्ण कविताओं से सभी को अहलिद् करने वाले इकहरी कायाधारी डॉ0मुन्नूलाल आनन्द का जन्म 25 अगस्त सन् 1900 को जालौन में श्री गोविंदराव तिवारी के घर हुआ था। मिडिल स्कूल तक शिक्षा प्राप्त कर आप सन् 1938 में ग्राम सुधार संघ के सहायक संगठक के पद इमलिया व इटौरा को सभाँलते हुए एक सतत् विप्लवी एवं कांग्रेस के एक निष्ठावान कार्यकर्ता के रूप में अनवर कार्य करते रहे। संयुक्त प्रान्त के प्रधानमंत्री पं0गोविन्द बल्लभ पंत मन्त्रिमण्डल के त्यागपत्र की घटना से अपने अंग्रेजी हुकूमत के प्रति द्वेष के कारण अपने ग्राम सेवक पद से इस्तीफा दे सक्रिय क्रान्तिकारी आन्दोलन में कूद पड़े। आपने अपनी क्रान्तिकारिता का परिचय देते हुए सन् 1930 में छःवर्ष की सजा तथा सन् 1941–42 में तीन बार जेल यात्रायें की। क्रान्तिकारी गतिविधि करते हुए आपने साथियों सहित बंगरा व माधौगढ़ के बीच लगे नगर किनारे तारों को कांटा था एवं नहर विभाग के सिपाही द्वारा चिल्लाने पर उसकी जमकर धुनाई कर भाग गये थे।

आपने कवि ह्रदय एवं साहित्यकार की दक्षता का परिचय देते हुए झाँसी की रानी, सन् 1948 का एम0एल0ए0 राज्य, माधवनिदान, आदि का काव्य लेखन जेल के अन्दर ही किया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आपने देश भर में आयोजित कवि सम्मेलनों में 'झांसी की रानी' खण्ड काव्य के वीर रस से गणे गीतों को सुनाकर राष्ट्रभक्ति की अलख जगाई थी। अपनी व्यंग्य पूर्ण कविताओं द्वारा युवाओं में देशप्रेम का जोश भरने वाले इस विप्लवी कवि का 7 अक्टूबर सन् 1977 को स्वर्गवास हो गया।[54]

स्वभाव से क्रान्तिधर्मी क्रान्तिकारी : तुलसीराम त्रिपाठी (बब्बा) (सन् 1911–2001)

जीवनपर्यंत तन पर खादी पहनने वाले, धार्मिक स्वाभावी, हाथ में माला तथा सर टोपीधारी तुलसीराम बब्बा का जन्म 1 फरवरी सन् 1911 को खकसीस में हुआ था। शिक्षा ग्रहण के दौरान कानपुर प्रवास में ही आप क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आ गये थे। कानपुर में ही आपने

कलक्टर गंज में बम बनाने की कला सीखी थी। परन्तु बम निर्माण कार्य की सूचना पुलिस को लग जाने पर पुलिस दबिश में अपने क्रान्तिकारी साथियों के साथ गिरफ्तार हुए तथा 4 महीने सश्रम कारावास की सभा भोगी थी। 9 अगस्त सन् 1943 को कानपुर सेन्ट्रल में प्लेटफार्म नम्बर एक पर आने वाले मिलेट्री गाड़ी को उड़ाने के लिए कनस्तर बम रखा था लेकिन बम समय से पूर्व ही फट गया जिससे दो निर्दोषयात्री मरे व चार घायल हुए थे। शंभू दयाल की मुखबरी से आपको गिरफ्तार कर उन्नाव जेल भेज दिया गया। जेल के अन्दर क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलिप्तता के आपको घोर अमानवीय यात्रनाएं दी गयी। 31 दिसम्बर सन् 1943 को आपको निजी मुचलके पर जेल से रिहा कर दिया गया था। शेष जीवन गाँधीवादी नियमों पर चलते हुए जीवन के अन्तिम पड़ाव में आपने उरई नगर में तुलसी धाम नाम का विवाह घर बनवा, अपने जीवित रहते ही एक प्रस्तर आदमकद प्रतिमा भी बनवाई। नगर को **'तुलसी धाम'** नाम का अभयकीर्ति स्तम्भ दे इस धर्मात्मा ने दुनिया से विदा ले ली।[(55)]

क्रान्तिकारी आन्दोलन में जनपद–जालौन के योगदान का मूल्यांकन

क्रान्तिकारी आन्दोलन में जनपद–जालौन ने उत्साहपूर्वक भाग लिया था। जनपदीय लोगों ने प्रान्तीय स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सहभागिता दर्ज की थी। इस आन्दोलन में शीर्ष जनपदीय कांग्रेसी नेता तो सक्रिय रहे थे एवं इनका सहयोग युवा व क्रान्तिकारी के नये मण्डल ने भी अपनी साहसिकता का परिचय दिया था। क्रान्तिकारी आन्दोलन के दौर में वीरभद्र तिवारी ने **'काकोरी काण्ड'** एवं **'लाहौर षड्यन्त्र'** में देशभक्ति पूर्ण सहभागिता दिखाकर जनपद का नाम ऊँचा किया वहीं चन्द्रशेखर आजाद की गतिविधियों की सूचना अंग्रेजी शासन को दे माहिल मामा की नगरी उरई को गद्दारी का धब्बा भी दिया था।

इस दौर में जहाँ एक ओर जगन्नाथ घोष जैसे क्रान्तिकारी अपना ग्रहस्थ जीवन छोड़ पूरी शक्ति एवं उत्साह के साथ जुड़े वहीं दूसरी ओर उदारवादी कांग्रेस के प्रबल समर्थक नारायण राव मेमने भी क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रिय हो गये। क्रान्तिकारी गतिविधियों को सक्रिय करने के लिए इसी समय चन्द्रशेखर आजाद ने भी अपना कुछ समय जालौन में गुजारा था। डॉ0आनन्द के पुत्र रविन्द्र शर्मा अपने पिता द्वारा बताये गये सस्मरण सुनाते हुए बतलाते है कि जिस समय चन्द्रशेखर आजाद उनके घर में रूके थे, उसी दौर में दो बंगाली लड़कियाँ क्रान्तिकारी गतिविधियों को संचालित करने के लिए बंगाल से आजाद जी को असलहा देने आयी थी। आजाद जी ने इन लड़कियों की खूबसूरती देखकर कहा था कि तुम लोग यह काम बन्द कर दो, क्यों कि तुम्हारी सुन्दरता की वजह से लोग तुम्हारा पीछा कर सकते है। जिससे क्रान्तिकारी गतिविधियों की सूचना शासन को पहुंच सकती है। लड़कियों ने अपनी देशभक्ति को दिखाते हुए अपने चेहरे पर तेजाब डालकर, आन्दोलन से जोड़े रखने का प्रयास कर अपने क्रान्तिकारी होने का परिचय दिया था। इस तरह के क्रियाकलापों के कारण ही जनपद में क्रान्तिकारी घटनाओं का अम्बार सा आ गया था। सम्पूर्ण जनपद में क्रान्तिकारियों ने सरकारी संचार व्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए भारी मात्रा में तार काटे तथा रेल पटरियों को उखाड़ने का भी प्रयास किया। जहाँ एक ओर डॉ0आनन्द ने गजेन्द्र सिंह व चौबे जी के सहयोग से **'सिपाही कांड'** किया तो वही दूसरी ओर कालपी में कृष्ण स्वरूप शर्मा ने भी अपने साथियों के साथ मिलकर सरकारी गाड़ी को लूट–पाट कर उसे आग के हवाले कर दिया था।

क्रान्तिकारी आन्दोलन के दौर में जगन्नाथ घोष ने सबसे महत्वपूर्ण योगदान देते हुए जनपद में क्रान्तिकारी आन्दोलन को सक्रिय करने के लिए फायर बिग्रेड जैसे संगठनों का गठन किया था। हिटलर के नाम से प्रसिद्ध बद्रीप्रसाद पुरवार ने उत्साहित हो तिरंगा झण्डा फहराया एवं जेल के अन्दर भी क्रान्तिकारी कृत्यों द्वारा जेलर सहित जेल प्रशासन को लगातार छकाये रखा। जगन्नाथ प्रसाद हरिजन ने तो जेल के अन्दर ही अंग्रेजी शासन के खौफ को कम करने के लिए जेलर को ही तसला जड़ दिया था। इस प्रकार इस क्रान्तिकारी दौर में जनपद में चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारियों की भांति किसी ने अपनी जान तो न्योछावर नहीं की पर उनके विचारों को आम जनता तक अवश्य पहुँचा दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रसाद कामेश्वर : भारत का इतिहास, पृष्ठ–206
2. चन्द्राविपिन मुखर्जी, पनिकर एवं महाजन : भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, पृष्ठ– 189
3. राम सत्या : भारत में राष्ट्रवाद, पृष्ठ–54, 55
4. प्रसाद कामेश्वर : भारत का इतिहास, पृष्ठ–296.
5. गुप्त मन्मथनाथ : भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ–198
6. गुप्त मन्मथनाथ : भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ–199.
7. व्यक्तिगत साक्षात्कार : श्री वीरभद्र तिवारी, दिनांक 27.02.2011
8. गुप्त मन्मथ नाथ : भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ–217, 222.
9. चन्द्रा विपिन : आधुनिक भारत, पृष्ठ–209
10. राम सत्या : भारत में राष्ट्रवाद, पृष्ठ–134
11. अग्रवाल आर0सी0 : भारतीय संविधान का विकास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, पृष्ठ–145
12. चन्द्रा विपिन : आधुनिक भारत, पृष्ठ–209.
13. शर्मा शिव : सरदार भगत सिंह की चुनी हुई कृतियाँ, समाजवादी साहित्य सदन, कानपुर 1987, पृष्ठ–95,96
14. गुप्त मन्मथ नाथ : भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ–232
15. Balshashtri Hardas : Armed Struggle for Freedom, P-240
16. सिंह जगमोहन, चमन लाल : भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज, पृष्ठ–209
17. वर्मा शिव : शहीद भगत सिंह की चुनी हुई कृतियाँ, पृष्ठ–131
18. सिंह जगमोहन, चमन लाल : भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज, पृष्ठ–209
19. सक्सेना राजेन्द्र : भारतीय राजनीति में भगत सिंह का योगदान, पृष्ठ–98
20. राम रज्जू : अमर शहीद चन्द्र शेखर आजाद और सातार तट, मध्यप्रदेश संदेश, भोपाल, 1987
21. गुप्त मन्मथनाथ : भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ–244.
22. अग्रवाल आर0सी0 : भारतीय संविधान का विकास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, पृष्ठ–152
23. ब्यास विश्व स्नेही : त्रिवेणी, बेप्रास प्रकाशन गरौठा, झाँसी, 1937, पृष्ठ–3

24. शर्मा चतुर्भुज : विद्रोही की आत्मकथा, पृष्ठ–24,25
25. व्यक्गित साक्षात्कार : वीर भद्र तिवारी, दिनांक 27.02.2011
26. चन्द्रा विपिन, मुखर्जी पनिकर एवं महाजन : भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, पृष्ठ–190
27. व्यक्तिगत साक्षात्कार :नम्रता तिवारी व अविनाश चन्द्र पाण्डेय।
28. शर्मा चतुर्भुज : विद्रोही की आत्मकथा, पृष्ठ–43
29. शर्मा चतुर्भुज : विद्रोही की आत्मकथा, पृष्ठ–45
30. अग्रवाल आर0सी0 : भारतीय संविधान का विकास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, पृष्ठ–145
31. आचार्य भगवान देव : बलिदान, पृष्ठ–278
32. गुप्त मन्मथ नाथ : भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ–231, 232
33. गुप्त मन्मथ नाथ : भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ–235.
34. प्रसाद कामेश्वर : भारत का इतिहास, पृष्ठ–297.
35. व्यक्तिगत साक्षात्कार : श्री वीरभद्र तिवारी, दिनांक 27.02.2011
36. गुप्त मन्मथनाथ : भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ–265.
37. पुरवार डॉ0 राजेन्द्र : बुन्देलखण्ड की राजनैतिक प्रयोगशाला, जनपद–जालौन, पृष्ठ–95
38. व्यक्तिगत साक्षात्कार : अशोक कुमार गुप्ता
39. यक्तिगत साक्षात्कार : रामचरन मेठ (भाई जगन्नाथ प्रसाद हरिजन), दिनांक 03.12. 2007
40. व्यक्तिगत साक्षात्कार : सन्तोष कुमार पुरवार, दिनांक 21.08.2007
41. शर्मा चतुर्भुज : विद्रोही की आत्मकथा, पृष्ठ–124
42. व्यक्तिगत साक्षात्कार : अशोक कुमार गुप्ता
43. व्यक्तिगत साक्षात्कार : हर स्वरूप शर्मा (भाई कृष्ण स्वरूप शर्मा), दिनांक 20.08. 2007.
44. व्यक्तिगत साक्षात्कार : रविन्द्र शर्मा, दिनांक 10.05.2010
45. व्यक्तिगत साक्षात्कार : अशोक कुमार गुप्ता
46. शर्मा चतुर्भुज : विद्रोही की आत्मकथा, पृष्ठ–6
47. व्यक्तिगत साक्षात्कार : माणिक चन्द्र शर्मा, दिनांक 29.12.2007
48. व्यक्तिगत साक्षात्कार : सन्तोष कुमार पुरवार, दिनांक 21.09.2007
49. व्यक्तिगत साक्षात्कार : श्री वीरभद्र तिवारी, दिनांक 27.02.2011
50. व्यक्तिगत साक्षात्कार : हर्ष स्वरूप शर्मा, दिनांक 20.09.2007
51. व्यक्तिगत साक्षात्कार : रामचरन मेठ, दिनांक 03.12.2007
52. पुरवार डॉ0 राजेन्द्र कुमार : बुन्देलखण्ड की राजनैतिक प्रयोगशाला, जनपद–जालौन, पृष्ठ–124, 125.
53. पुरवार डॉ0 राजेन्द्र कुमार : बुन्देलखण्ड की राजनैतिक प्रयोगशाला, जनपद–जालौन, पृष्ठ–130, 131
54. व्यक्तिगत साक्षात्कार : रविन्द्र शर्मा, दिनांक 16.05.2010

55. पुरवार डॉ0 राजेन्द्र कुमार : बुन्देलखण्ड की राजनैतिक प्रयोगशाला, जनपद–जालौन,पृष्ठ–132,133

Copyright © 2017, Dr. Ranvijay Singh. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.